JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पर्यावरण प्रबंधन–आवष्यकता एवं चुनौतियां

डॉ.मीना राय
शास.महाविद्यालय तेन्दूखेड़ा
जिला–दमोह (म.प्र.)

शोध सारांष

इस ब्रह्माण्ड में प्रकृति सबसे शक्तिषाली है, क्योंकि यही सृजन एवं विकास और सही ह्रास तथा नाष करती है,। अतः प्रकृति के विरूद्ध आचरण नही करना चाहिए।

पर्यावरण प्रबंधन का तात्पर्य पर्यावरण के प्रबंधन से नही है, बल्कि आधुनिक मानव समाज के पर्यावरण के साथ संपर्क तथा उस पर पड़ने वाले प्रभाव के प्रबंधन से है। प्रबंधकों को प्रभावित करने वाले तीन प्रमुख मुद्दे हैं। राजनीति (नेटवर्किंग), कार्यक्रम (परियोजनायें) और संसाधन (धन सुविधायें आदि)।

पर्यावरण प्रबंधन की की अवधारणा जितनी पुरानी है, उतनी ही नवीन है। पूर्व में पर्यावरण प्रबंधन आचरण परक होने से वह जीवन शैली का अंग बन गया था, फलतः सभी सामाजिक–आर्थिक निर्णय विचारपूर्वक लिये जाते थे, जिस कारण पर्यावरण प्रदूषण की घटनायें नगण्य थी, साथ ही मानव और प्रकृति के रिष्ते इतने मधुर थे कि मानव की छोटी–छोटी गलतियां प्रकृति स्वयं ही नियन्त्रित कर लेती थी, किन्तु आधुनिक विकास के नाम पर प्रकृति से छेड़छाड़ पर्यावर्णीय संकटों को बढ़ा रहा है। इस कारण उचित दिषा में अग्रसर होने के लिये पर्यावरण प्रबंधन की आवष्यकता महसूस की जा रही है। वास्तव में पर्यावरण प्रबंधन पर्यावरण का नही वरन् मानव की उन अनुचित क्रियाओं का होना चाहिए जिससे कि पर्यावरण की गुणवत्ता को क्षति पहुंच रही है। इस प्रकार पर्यावरण प्रबंधन उन कार्यों और घटनाओं का नियमन है, जिनके कारण पर्यावरण का अवनयन हो रहा है।

बीज शब्द–पर्यावरण प्रबंधन, पर्यावरण प्रदूषण

प्रस्तावना

पिछले कुछ दषकों से इस विषय में जागरूकता के साथ ही चिंता भी बढ़ रही है कि जिस पर्यावरण में हम रहते हैं, वह बड़ी तेजी से दूषित हो रहा है। जिस हवा में हम सांस लेते हैं और जिस पानी को हम पीते हैं वे दूषित हो रहे हैं। वर्षा अनियमित होने लगी है और वन नष्ट होते जा रहे हैं। कई पौधे और जंतु लुप्त हो गये हैं। भूमि की उपजाऊ ऊपरी मृदा (Topsoil) कर रही है और पृथ्वी की ओजोन परत भी धीरे–धीरे नष्ट हो रही है। इससे भू–मण्डल के गर्माने का खतरा दिखाई दे रहा है। पर्यावरण की ऐसी दुर्दषा पृथ्वी पर मानव के अस्तित्व के लिए खतरा बन रही है। दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि समस्याएं स्वयं मानव ने पैदा की है।

जीवन को आधार देने वाले सभी तत्व हमें अपने पर्यावरण से ही मिलते हैं किन्तु इसके बदले में हम पर्यावरण को अक्षुण्ण रखने के लिए कुछ नही करते। मूलतः आवष्यकता है हम अपने पर्यावरण की देख–रेख या उसका प्रबंधन सही तरह से करें। हमारीं गतिविधियों से पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव का हमें अनुमान और विष्लेषण कर लेना चाहिए। जिससे हम पहले से ही सावधानी के उपाय ढूंढ लें। इसलिए वातावरण के प्रति सही दृष्टिकोण विकसित करने के लिए लोगों को षिक्षित करने की जरूरत है।

पर्यावरण प्रबंधन की आवष्यकता

पर्यावरण प्रबंधन की आवष्यकता को कई दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है। पर्यावरण प्रबंधन के पीछे एक आम विचार तथा प्रेरणा है। कैरीयिंग केपेसिटी (वहन क्षमता) की अवधारणा। आसान भाषा में कहें तो वहन क्षमता का तात्पर्य किसी विषेष पर्यावरणीय तंत्र द्वारा अपने भीतर जीवों की अधिकतम संख्या को धारण करने की क्षमता से है। हालॉकि कई संस्कृतियों को ऐतिहासिक रूप से वहन क्षमता की

अवधारणा की समझ थी, लेकिन इसका मूल माल्थूसियन थ्योरी में है। अतः पर्यावरण प्रबंधन का अर्थ केवल पर्यावरण की खातिर उसके संरक्षण से नही बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति की खातिर पर्यावरण के संरक्षण से है।

पर्यावरण प्रबंधन एक जटिल प्रक्रिया है जो व्यक्ति से व्यक्ति समुदाय से समुदाय तथा प्रदेष से प्रदेष में भिन्नता रखती है, क्योंकि पर्यावरण का स्वरूप भिन्नता से युक्त हैं, तथा इसके विभिन्न घटकों का अनुपात स्थान–स्थान पर भिन्नता लिये होता है। मानव ने पर्यावरण के निरंतर उपयोग से जहॉ प्रगति की है, वहीं अपने पर्यावरणीय ज्ञान में भी समुचित वृद्धि की है और आज वह प्राकृतिक एवं जैविक अंतर्सबंधों को सूक्ष्मता से समझने में समर्थ हुआ है।

इसके साथ ही उसने पर्यावरण का अधिकतम उपयोग करना प्रारंभ किया है, परिणामस्वरूप उसका प्रभाव न केवल जीव जगत पर अपितु पर्यावरण के घटकों पर भी हो रहा है और उनकी स्वाभाविक प्रक्रिया में व्यवधान आने से एक ओर प्राकृतिक आपदाओं का बोलबाला हो रहा है, तो दूसरी ओर मानव अनेक मानसिक एवं शारीरिक व्याधियों से ग्रासित होता जा रहा है। जीवों एवं पादपों की अनेक प्रजातियां विलुप्त होती जा रही हैं। संसाधनों के समाप्त होने का संकट दिनो–दिन गहराता जा रहा है।

पर्यावरण प्रबंधन का उद्देष्य

पर्यावरण प्रबंधन का मूल उद्देष्य प्राकृतिक संसाधनों का युक्ति संगत उपयोग, शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा आर्थिक मूल्यों को नई दिषा प्रदान करना तथा शुद्ध पर्यावरण प्रदान करना है। यह कार्य एकाकी अथवा एक संस्था का न होकर सामूहिक रूप से ही संभव है। इसमें प्रषासन, सामाजिक संस्थायें और प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका महत्वपूर्ण है। यदि हम पर्यावरण की शुद्धि चाहते हैं तथा भविष्य में उसे स्वच्छ एवं स्वास्थ्यवर्धक रखना चाहते हैं तो हमें इसके प्रबंधन पर समुचित ध्यान देना होगा।

पर्यावरण प्रबंधन के घटक

पर्यावरण प्रबंधन में जैव–भौतिक वातावरण के सभी घटक शामिल होते हैं, जैविक तथा अजैव दोनों। इसका कारण है सभी जीवित प्रजातियों और उनके निवास स्थानों के बीच परस्पर रूप से आपस में जुड़े हुए संबंध। पर्यावरण में मानव पर्यावरण के आपसी संबंध भी शामिल हैं, जैसा कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिवेष का जैव–भौतिक वातावरण के साथ संबंध।

पर्यावरण प्रबंधन की प्रणालियां

सभी प्रबंधन कार्यों के समान इसके लिए भी प्रभावी प्रबंधन मानकों और प्रणालियों की आवष्यकता होती है। पर्यावरण प्रबंधन के मानक या प्रणाली या प्रोटोकॉल किसी उपयुक्त मापदण्ड द्वारा मापे गए पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने की चेष्टा करते हैं। आई एस ओ 14001 मानक, पर्यावरण जोखिम प्रबंधन के लिए सबसे अधिक उपयोग किया जाने वाला मानक है और यह यूरोपिन इको–मैनेजमेंट एण्ड ऑडिट स्कीम (EMAS) के साथ काफी करीबी रूप से जुड़ा हुआ है। एक सामान्य ऑडिटिंग मानक के रूप में आईएसओ 19011 मानक में इसे गुणवत्ता प्रबंधन के साथ जोड़ने के बारे में बताया गया है।

पर्यावरण प्रबंधन के अंतर्गत नियोजन, विष्लेषण, मूल्यांकन एवं उचित निर्णय द्वारा सीमित संसाधनों का उपयोग तथा प्राथमिकताओं में परिवर्तन आवष्यक है जिससे वास्तविक जीवन में वे उपयोगी हो सकें। अन्य पर्यावरण प्रबंधन प्रणालियां (ईएमएस) आईएसओ 14001 मानक पर आधारित होती है और कई प्रणालियां इसको विभिन्न तरीकों से करती हैं।

- ग्रीन ड्रेगन पर्यावरण प्रबंधन मानक एक पांच स्तरों वाला ईएमएस है जिसे उन छोटे संगठनों के हिसाब से बनाया गया है जिनके लिए आईएसओ 14001 काफी दुष्कर सिद्ध हो सकता है अथवा उन बड़े संगठन के लिए जो आईएसओ 14001 को अधिक आसान कदम दर कदम तरीके से लागू करना चाहते हैं।
- बीएस 8555 एक चरणबद्ध मानक है जो छोटी कंपनियों को छह चरणों में आईएसओ 14001 तक पहुंचने में मदद कर सकता है।
- अमेरिका पर्यावरण संरक्षण एजेंसी के पास कई अन्य शब्द मानक हैं, जिनको वह बड़े आकार वाले ईएमएस के हिसाब से परिभाषित करती है।
- प्राकृतिक पूंजीवाद इसी काम को करने के लिये लेखा प्रक्रियाओं में सुधार तथा सामान्य बायो–मिमिक्री एवं औद्योगिक पारिस्थितिकी दृष्टिकोण का उपयोग करने की सलाह देता है।
- संयुक्त राष्ट्र और विष्व बैंक ''नेचुरल केपिटल'' (प्राकृतिक पूंजी) को मापने तथा उसके प्रबंधन के एक नए ढांचे के इस्तेमाल को प्रोत्साहित करता है।

चुनौतियां

हमारी पृथ्वी मौजूदा समय में जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता के क्षरण तथा प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन जैसी प्रमुख समस्याओं से जूझ रही है। वर्तमान में सभी बड़े देषों का आर्थिक मॉडल प्राकृतिक संसाधनों के अति दोहन पर आधारित है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार प्राकृतिक संसाधनों का निष्कर्षण और प्रसंस्करण वैष्विक ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन के आधे के लिये उत्तरदायी है, साथ ही 80–90 प्रतिषत जैव विविधता के क्षरण के लिये भी उपर्युक्त कारण भी जिम्मेदार है। जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरण से संबंधित चुनौतियों एवं इनकी तीव्रता को ध्यान में रखते हुए समय तेजी से निकल रहा है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए वैष्विक स्तर पर सहयोग पर आधारित व्यापक रणीनीति का निर्माण करना होगा।

विष्व में कोई भी देष अपने बल पर पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने में सक्षम नहीं है। इसके लिए विभिन्न देषों को मिलकर व्यापक एवं प्रभावी समाधान खोजने होंगे, साथ ही न सिर्फ राष्ट्रीय स्तर पर बल्कि अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर भी सहयोग को बढ़ावा देना होगा। इसके लिये सिविल समाज, अकादमिक क्षेत्र से संबंधित लोगों, निजी क्षेत्रों तथा सरकारों को भी इसमें शामिल करना होगा।

संयुक्त राष्ट्र की संस्था UN पर्यावरण तथा UNEA अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न समझौतों पर चर्चा के लिये तथा जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिये एक प्रभावी मंच प्रदान कर रहे हैं, किन्तु मौजूदा प्रयास इन चुनौतियों को दूर करने में कारगर साबित नहीं हो रहे हैं, फिनलैंड ने विभिन्न देषों और समझौतों से आगे बढ़कर वर्ष 2035 तक स्वयं को कार्बन न्यूट्रल करने का निर्णय लिया है। अन्य देषों को भी फिनलैंड से प्रेरणा लेने की आवष्यकता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

प्राचीन पद्धतियों को नकारना सार्थक नही अपितु उन्हें आधुनिक परिवेष में परिवर्तित कर पर्यावरण की अनेक समस्याओं को दूर किया जा सकता है। पर्यावरण प्रबंधन मात्र सरकारी संस्थाओं का ही नही अपितु स्वयंसेवी संस्थायें तथा समाज के प्रत्येक व्यक्ति को इस कार्य में भागीदार बनना होगा तभी पर्यावरण को प्रदूषित होने से रोका जा सकता है और पारिस्थितिकी तंत्र को संतुलित रख विष्व के भविष्य को सुरक्षित बनाया जा सकता है।

आज हमारे पर्यावरण का प्रबंधन किस तरह होता है, हमारा भविष्य इस पर निर्भर है। अगर हम पर्यावरण को नष्ट करते हैं तो इससे हम अपने ही अस्तित्व को खतरे में डालते हैं। पर्यावरण के सफल प्रबंधन के लिए पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं पर जानकारी आवष्यक है। हमारे जैविक समुदायों, भू–आकृति विज्ञान, जलवायु तथा पर्यावरण से संबद्ध विभिन्न कार्यों पर आंकड़ा उपलब्ध होने चाहिए। पर्यावरण को बचाने एवं इसका प्रबंधन समुचित तरीके से करने के लिए सरकार कई उपाय कर रही है। पर्यावरण के प्रबंधन एवं संरक्षण के लिए जनसाधारण में चेतना बेहद आवष्यक है। पिछले कुछ दषकों में चेतना अवष्य बढ़ी है। ऐसा सरकारी तथा गैर सरकारी संगठनों की सक्रिय भागीदारी से हुआ है। गैर सरकारी संगठनों को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। परंतु इसके बावजूद भी वे पर्यावरण संरक्षण में ठोस योगदान दे रहें हैं।

- अंधाधुंध विद्वोहन को रोकना।
- तापमान बढ़ने से ग्लेषियर पिघल रहा है। इससे जल स्तर समुद्र में बढ़ रहा है जिससे जीव जन्तु को नुकसान पहुॅच रहा है।
- प्राकृतिक स्त्रोत पर निर्भरता कम करके वैकल्पिक स्त्रोत पर बल देने की आवष्यकता है।
- जैव विविधता में संतुलन की आवष्यकता है।
- जनसंख्या बढ़ने से प्राकृतिक संसाधनों पर दबाब बढ़ता है इसके लिए नियोजित जनसंख्या नीति की आवष्यकता है।
- ऊर्जा की उपलब्धता तथा उत्पादकता स्तर की जानकारी के अभाव में किसी भी क्षेत्र में किए गए पर्यावरण प्रबंधन वस्तुतः प्रामाणिक सिद्ध नही हो सकते हैं।

संदर्भ सूची

1– आर.बिले, ''इन्टेग्रेटेड कोस्टल जोन मैनेजमेंट : फोर इंट्रेन्चड इल्यूजंस ''एस.ए.पी.आई.ई.एन.एस. 1 (2), 2008

2– रमेष चन्द्रप्पा और रवि डी.आर., पर्यावरणीय समस्याएं, विधि और प्रौद्यौगिकी–एक भारतीय परिपेक्ष्य, रिसर्च इंडिया प्रकाषन दिल्ली 2009

3– टी.एन. शुक्ला, मध्यप्रदेष हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल।

4– "The Little Green Date Book" The Wold Bank 2010

5– Environment Assessment, Country Date, India "The Wold Bank 2011

6– दयाषंकर त्रिपाठी, पर्यावरण अध्ययन, मोतीलाल बनारसी पब्लिषर्स दिल्ली 2005

7– प्रभासाक्षी, ई–न्यूज पेपर, 25 दिसंबर 2019।